बाइबल टीचर

वर्ष 16 | अक्टूबर 2019 | अंक 11

सम्पादकीय

धार्मिक अगुवे

मनुष्य शायद यह भूल जाता है कि वह कुछ भी नहीं है। कई लोग ऐसा सोचते हें कि हम बहुत पैसे वाले हैं या हम बहुत प्रसिद्ध है। लोग हमारी वाह! वाह! करते हैं तथा कई बार दिमाग यहां तक चला जाता है कि हमारे से बढ़िया कोई नहीं है। मेरे दोस्त आपको यह समझना चाहिए कि आप कुछ भी नहीं है। आप मिट्टी हैं तथा कुछ ही क्षणों में मिट्टी में मिल जाते हैं। बाइबल बताती है कि आदम की तरह मनुष्य मिट्टी से बना है और एक दिन मिट्टी में मिल जाना है। (सशोपदेशक 12:7)।

आज मसीहीयत में भी एक बात देखने को मिलती है कि कुछ लोग अपने को बहुत बड़ा बनाकर दूसरों के सामने पेश करते हैं। बात तो यह है कि कुछ वर्षो पहिले जब साम्प्रदायिक कलीसियाएं पनप रही थी तब कुछ लोगों ने अपने-अपने तरीकों से मसीहीयत को पेश किया। कुछ ऐसे धार्मिक अगुवे थे जिन्होंने बाइबल को तो ताक पर रख दिया जो कि आज भी हो रहा है तथा अपनी बनाई हुई शिक्षाओं को लोगों पर थोपने लगे। यीशु ने ऐसे लोगों के विषय में कहा था कि यह "मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती 15:9)। इस प्रकार के धार्मिक अगुवे अपनी बाइबल का अध्ययन तो करते नहीं है परन्तु जो बातें उन्हें सैमीनरी में सिखाई जाती है तथा वे वो ही करना चाहते है जो उनकी कलीसिया द्वारा आज्ञा दी जाती है। बहुत से प्रचारक भिन्न-भिन्न प्रकार के चोगे पहिनते हैं और यह इसलिये है क्योंकि उनको ऐसा सिखाया जाता है और बताया गया है कि तुम बड़े विशेष तथा स्पेशल हो। मसीह ने कभी भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी। उसने तो बल्कि इन बातों के बारे में अपने दिनों में फरीसी और सदूकी लोगों को उलहाना दी थी। क्योंकि वे सोचते थे कि हम तो गुरूजी है इसलिये हमें सलाम करो और हमारी बढ़ाई करो। देखिये यीशु का स्वभाव ऐसा नहीं था क्योंकि उसने कभी अपनी बढ़ाई नहीं चाही बल्कि अपने चेलों के पांव भी धोये थे। बाइबल कहती है जैसा "यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी हो।" (फिलि. 2:5)। मेरे मित्र यदि आपका स्वभाव यीशु जैसा है तो आप अपने आपको दूसरों के सामने बड़ा नहीं बनायेंगे। बाइबल कहती है, "आपस में एक सा मन रखो; अभिमानों न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो, अपनी दृष्टि में

बुद्धिमान न हो" (रोमियों 12:16)। परन्तु अक्सर देखा जाता है कि अगुवे यह सोचते हैं कि मेरे से अधिक कोई बुद्धिमान नहीं है। और मेरे अलावा कोई दूसरा बाइबल सीखा ही नहीं सकता।

आइये कुछ ऐसे नामों को देखें जिन्हें लोग अपने नामों के साथ जोड़ते हैं ताकि उन्हें आदर सम्मान मिले। यह पदवियां जो धार्मिक रूप से धार्मिक अगुवे अपने नाम के आगे लगाते हैं।

हम देखते हैं कि कुछ लोग अपने नाम के आगे "रैवरण्ड" लगाते है। यदि आप उन्हें रैवरण्ड न बोले तो वे बुरा मान जाते हैं। कई अपने को राइट रैवरन्ड भी कहते हैं ये शब्द बाइबल में एक ही बार आया है यानि अंग्रेजी की बाइबल (OLD KJV), में भजन 111:9 में लिखा है कि रैवरन्ड नाम केवल परमेश्वर का है, और इस शब्द का अर्थ है "भय योग्य" यानि जिससे भय खाया जाये। जो अपने को रैवरन्ड कहते हैं क्या वे परमेश्वर के तुल्य हैं? ऐसे लोगों को परमेश्वर से डरना चाहिए।

आज बहुत सारे धार्मिक अगुवे अपने को फादर कहलाना पसंद करते हैं। यानि धार्मिक पिता और यह बात बाइबल के बिल्कुल विरूद्ध है। कई तो इस बात से सन्तुष्ट नहीं होते और वे चाहते हैं कि लोग उन्हें हॉली फादर कहें। यदि आपने इन्हें मिस्टर या ब्रदर कह दिया तो वे बहुत बुरा मान जाते हैं। इन लोगों को यीशु की वो बात याद दिलानी चाहिए, जब यीशु ने कहा था, "पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" (मत्ती 23:9)। बड़े ही दुख की बात है कि लोग सीधे परमेश्वर के वचन का विरोध कर रहे हैं।

यीशु ने ऐसा कहा था, "कि वे तुम से जो कुछ कहे वह करना, और मानना; परन्तु उनके जैसे काम मत करना। यीशु ने कहा कि ये लोग कहते तो हैं पर करते नहीं। यह लोगों पर भारी बोझ डालते हैं; खुद तो उठाते नहीं, परन्तु बांधकर मनुष्यों के कंधों पर रखते हैं, और अपनी उंगली से सरकाते भी नहीं। वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते है। वे अपने चोगों को चौड़ा करते हैं, बड़े-बड़े चोगे पहिनते हैं। सभाओं में उन्हें बैठने के लिये बढ़िया और मुख्य स्थान चाहिए। बजारों में लोग उन्हें देखकर सलाम करें तथा उनके सामने झुकें तथा उसने कहा था कि तुम उनके जैसे मत बनना क्योंकि तुम्हारा पिता परमेश्वर एक है और तुम्हारा एक ही गुरू है। तुम आपस में भाई हो" (मत्ती 23) मित्रो यह सब जानने के बाद भी क्या अभी भी आपको कोई संदेह है कि एक धार्मिक अगुवे को कैसा होना चाहिए?

अब एक और बड़ा ही प्रचलित शब्द जो मसीहीयत में देखने को मिलता है वो है "पास्टर साहब" अधिकतर अगुवे यह पदवी अपने नाम के आगे लगाना पसंद करते है। बाइबल सैमीनरी या बाइबल स्कूल से निकलने के बाद वे ऐसा सोचते हैं कि, "मैं तो अब पास्टर बन गया हूं।" मुझे पास्टर कहकर बुलाओ। वे यह दिखाना चाहते हैं कि मैं अब कलीसिया का पास्टर हूं। क्या आपने अपनी

बाइबल में कहीं भी किसी भी आयात में पढ़ा है, पास्टर यूहन्ना, पास्टर पौलूस या पास्टर साहब पतरस। अब बाइबल में पास्टर शब्द तो इस्तेमाल हुआ है परन्तु एक पदवी दिखाने के लिये नहीं। कलीसिया में पास्टर चुने जाते थे और वो भी एक मण्डली में एक से अधिक और यह लोग बुजुर्ग या प्राचीन होते थे तथा इनका कार्य था चरवाहे की तरह कलीसिया की अगुवाई करना। बाइबल में पास्टरों की योग्यताएं दी गई हैं। 1 तीमुथियुस 3 में हम इन योग्यताओं के विषय में पढ़ सकते हैं। इन्हें बिशप भी कहा जाता था। आज देखने में आता है कि कोई भी व्यक्ति इस पदवी को अपने लिये इस्तेमाल करने लगता है। यह कोई पदवी नहीं है बल्कि परमेश्वर द्वारा दी गई एक जिम्मेदारी है। और वो भी बुर्जगों के लिए।

कई लोग तो धार्मिक रूप से अपने नाम के आगे डॉक्टर भी लगाते हैं। हमें हमेशा यीशु की उन बातों को याद रखना चाहिए जो उसने मत्ती 20:25-28 में कहीं थी। शायद आप नहीं जानते कि एक और पदवी जो धार्मिक रूप से इस्तेमाल की जाती है वो है, "पोप" यदि आपकी बाइबल में यह शब्द कहीं उपयोग हुआ है तो मुझे सूचित करें परन्तु असलियत तो यह है कि कहीं भी बाइबल में हम इस शब्द को नहीं पढ़ते। पोप का अर्थ है "पापा" अर्थात कैथोलिक चर्च का पापा, परन्तु मसीह की कलीसिया का हैड या सिर प्रभु यीशु मसीह है। (कुल. 1:18)।

हमें यह भी जानना चाहिए कि यह सारी धार्मिक पदवियां मनुष्य अपने आपको आदर देने के लिये इस्तेमाल करता है। परमेश्वर ने अपने वचन में इसका कोई अधिकार नहीं दिया है। यदि आप इन पदवियों को इस्तेमाल करते हैं तो एक दिन यानि न्याय के दिन आपको इसका जवाब देना पड़ेगा (2 कुरि. 5:10)। पते की बात तो यह है कि मनुष्य यह सब जानने के बाद भी अपने को बदलना नहीं चाहता क्योंकि उसे दूसरों के सामने आदर सम्मान चाहिए। हमें जानना चाहिए जो पृथ्वी पर अपने को बड़ा बनाकर आदर चाहते उन्हें एक दिन मिट्टी के भाव बिक जाना है। "एक दिन बिक जायेगा माटी के बोल"। यहां से जाने के बाद तब आपके आदर का क्या होगा? मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक बार मैं दिल्ली के एक क्रबिस्तान में गया और वहां एक धार्मिक अगुवे की बढ़िया सी मारबल पत्थर की कब्र पर मैंने उनकी बहुत सारी धार्मिक पदवियां लिखी हुई देखी। पौलुस ने कहा था कि यदि मैं महिमा करूंगा तो मसीह के क्रूस की क्योंकि "मै मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा पर मसीह मुझमें जीवित है।" (गलतियों 2:20)। प्रेरित ने एक और बात कही थी कि सब अपने स्वार्थ के चक्कर में रहते हैं, न कि यीशु मसीह के (फिली. 2:21)। दोस्तों यीशु की खरी शिक्षा आज सब अगुवों के लिये यह है जो उसने पौलुस के द्वारा दी थी, "मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चिंता और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझा। हर एक अपने ही हित की नहीं वरन दूसरों के भी हित की चिंता करे। जैसा यीशु मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी

स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आपको ऐसा शून्य (0) कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया।" (फिलि. 2:2-7)।

यीशु ने अपने को परमेश्वर का दास समझा। प्रेरितों ने अपनी पत्रियों में लिखा मैं परमेश्वर का दास पौलुस, पतरस और यूहन्ना लिख रहा हूं। आप क्या सोचते हैं? आप परमेश्वर के दास हैं या कुछ और?

एक उदाहरण की प्रार्थना

सनी डेविड

मित्रो! वे सब जो परमेश्वर से डरते और उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं वे परमेश्वर कि संतान है, और परमेश्वर के संतानों के पास अनेकों आशीषों के साथ-साथ एक विशेषाधिकार प्रार्थना करने का है। प्रार्थना का मनुष्य के जीवन में एक बड़ा ही विशेष स्थान है। प्रभु यीशु ने सिखाया था कि हमें नित्य प्रार्थना करनी चाहिए। (लूका 18:1)। प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के लोग अपने पिता के निकट आते हैं; और उससे बातें करते हैं। प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के लोग ऐसी शांति वा संतोष प्राप्त करते है जिसे संसार नहीं दे सकता। प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पाई जाने वाली अनेकों अन्य विशेष बातों में प्रार्थना का एक महत्वपूर्ण स्थान था। वे लोग जो प्रभु यीशु के जीवन से परिचित हैं, वे इस बात से अनजान नहीं है, कि वह अपने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में प्रार्थना को सबसे प्रमुख स्थान देता था।

प्रार्थना के बारे में एक जगह उसने शिक्षा देकर कहा था कि "जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।" अर्थात लोग उनकी प्रशंसा करेंगे, और कहेंगे कि अहा! देखो, यह मनुष्य कितना धर्मी है। उनका प्रतिफल बस केवल इतना ही होगा, अर्थात मनुष्यों की प्रशंसा और प्रभु ने आगे कहा, "परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बंद करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।" यहां प्रभु का यह अभिप्राय नहीं है कि जब भी हम प्रार्थना करें तो हम एक कोठरी में जाकर द्वार बन्द करके ही प्रार्थना करें और केवल तभी पिता हमारी सुनेगा। परन्तु यहां, विशेष रूप से, प्रभु हमें प्रार्थना करने का एक सिद्धान्त बता रहा है, अर्थात, जब हम प्रार्थना करें तो हमारी प्रार्थना में कोई दिखावटीपन न हो;

हमारी प्रार्थना किसी मनुष्य को दिखाने के लिये न हो; हमारी प्रार्थना में ऐसे-ऐसे ऊंचे शब्दों का उपयोग न हो जिनका उपयोग मात्र किसी मनुष्य को प्रसन्न करने के लिये या कदाचित मनुष्यों पर प्रभाव जमाने के लिये किया जाए। (देखिये मत्ती 6:5, 6)।

और फिर, प्रभु ने प्रार्थना करने का एक उदाहरण देकर कहा, "सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दें। और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और महिमा सदा तेरे ही है।" आमीन (मत्ती 6:9-13)।

यहां इस बात पर विशेष ध्यान दें कि प्रभु ने कहा, कि तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, अर्थात इस तरह से, इस प्रकार से। उसका कहने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं था, कि तुम इन्हीं शब्दों को बार-बार दोहराया करो, या इस प्रार्थना को रट लो और इसे बार-बार पढ़ा करो। परन्तु यहां वह प्रार्थना करने की उन्हें एक विधि बता रहा था, एक उदाहरण दे रहा था। क्योंकि जैसा कि हम पढ़ते हैं, कि चेलों ने उसके पास आकर निवेदन करके कहा था, कि प्रभु तू हमें प्रार्थना करना सिखा। (लूका 11:1)। सो प्रभु ने कहा, कि तुम इस रीति से या इस ढंग से प्रार्थना किया करो। मान लीजिए कि मैं किसी ऐसे स्थान पर जाऊं जहां वे हमारे संसार की अनेकों आधुनिक वस्तुओं से बिल्कुल अपरिचित हो। बातों ही बातों में मैं उनसे कदाचित जहाज का वर्णन कर बैठूं, परन्तु क्योंकि वे हवाई जहाज के बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानते, तो वे मुझ से पूछते हैं कि मैं उन्हें हवाई जहाज के बारे में बताऊं। सो हवाई जहाज के बारे में बताने के लिये सबसे अच्छा उदाहरण जो मैं ले सकता हूं वह है एक पक्षी का, अर्थात एक कौवा या चील। सो मैं उन्हें बताऊंगा कि हवाई जहाज एक पक्षी की तरह पंख फैलाए हुए हवा में उड़ता है, या जैसे चील हवा में तैरती है इसी रीति से हवाई जहाज भी ऊपर उड़ता है। सो अब वे समझ जाते हैं कि जिस रीति से एक बड़ा पक्षी हवा में उड़ता है उसी रीति से हवा में उड़ने वाली एक मशीन को हवाई जहाज कहते है। अब वे किसी चील या कौवे को उड़ता हुआ देखकर उसे हवाई जहाज नहीं कहेंगे परन्तु वे समझते हैं कि हवाई जहाज इसी रीति से उड़ता है। सो जब प्रभु ने अपने चेलों को सिखाया कि तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, तो उसके कहने का यह अर्थ कदापि न था कि तुम इसी प्रार्थना को रटकर बार-बार बोला करना, परन्तु उसने सिखाया कि तुम इस रीति से, या इस ढंग से या इस तरह से प्रार्थना किया करो।

जब हम एक प्रार्थना को रट लेते हैं और उसी को बार-बार दोहराते रहते हैं, तो हमारी प्रार्थना अर्थरहित बन जाती है, फिर वह प्रार्थना न रहकर एक कविता

बन जाती है। परन्तु हमारी प्रार्थना हमारे मन से निकलनी चाहिये। हमारी प्रार्थना एक टेप या रेकॉर्ड के समान नहीं होनी चाहिये, जिसे जब भी मशीन पर रखो तो एक ही सी बात सुनाई पड़ेगी। परन्तु हमारी प्रार्थना इस प्रकार से होनी चाहिए, जैसे कि छोटे-छोटे बालक, जो कि पूर्ण रूप से अपने माता-पिता पर ही निर्भर करते हैं, अपने पिता के सम्मुख अपने निवेदकों और आवश्यकताओं को प्रतिदिन रखते हैं।

जिस प्रार्थना के बारे में अभी थोड़ी देर पहिले हमने देखा, इसे अकसर लोग प्रभु की प्रार्थना कहते है। किन्तु वास्तव में यह प्रभु की प्रार्थना नहीं परन्तु एक उदाहरण की प्रार्थना है। इस प्रार्थना में हमें कुछ आवश्यक सिद्धांत मिलते हैं, जिन्हें हमें अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण रखना चाहिए, अर्थात वास्तव में हम सब का एक ही पिता है, जो कि स्वर्ग में है, और उसका नाम पवित्र है। जिस प्रकार से कि स्वर्ग दूत परमेश्वर की इच्छा स्वर्ग में पूरी करते हैं, वैसे ही हमें भी प्रयत्न करना चाहिए कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो। और परमेश्वर ने अपनी इच्छा को हम पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया है, इसलिये यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसकी इच्छा को मानें। फिर, हमें अपने दिन-भर की रोटी के लिये ही प्रार्थना करनी चाहिए। अर्थात, अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के लिये, ताकि हम सदा परमेश्वर के ऊपर निर्भर बने रहें। फिर, हम अपने अपराधों की क्षमा के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, परन्तु केवल तभी जबकि पहिले हमने उन लोगों के अपराधों को क्षमा किया है जिन्होंने हमारे विरोध में कुछ अनुचित या अपराध किया हो। इसलिये, क्योंकि प्रभु ने कहा, "यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराधा क्षमा न करेगा।" (मत्ती 6:14, 15)। फिर, हमें परमेश्वर से उसकी अगुवाई और आशीष मांगनी चाहिए, कि हम नाना प्रकार की परीक्षाओं और बुराईयों से बच सकें। हमें मानना चाहिए कि जिससे हम प्रार्थना करते हैं, वह परमेश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का अधिकारी है वह महापराक्रमी और महिमान्वित परमेश्वर पिता है।

एक बात पर और ध्यान दें, प्रभु ने उनसे राज्य के आने के लिये भी प्रार्थना करने को कहा, अर्थात, "तेरा राज्य आए।" उस समय प्रभु की कलीसिया की, जो कि प्रभु का राज्य है, स्थापना नहीं हुई थी, परन्तु उसने प्रतिज्ञा करके कहा था कि वह उसे शीघ्र ही बनाने वाला है। (मत्ती 16:18-19)। उसने अपने प्रचार के आरंभ में भी इसी बात पर बल देकर कहा, "कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्त 4:17)। और प्रभु ने अपने चेलों पर भी बड़े ही स्पष्ट रूप से प्रगट करके कहा, कि परमेश्वर का राज्य उनके जीवनकाल में ही सामर्थ सहित आएगा। लिखा है, "उस ने उनसे कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के

राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्य का स्वाद कदापि न चखेंगे।" (मरकुस 9:1)। परन्तु उस समय क्योंकि परमेश्वर का राज्य नहीं आया था तो प्रभु ने उनसे कहा, कि तुम परमेश्वर के राज्य के आने के लिये भी प्रार्थना कर सकते हो।

परन्तु कुछ ही समय बाद, प्रभु की प्रतीज्ञा अनुसार, उसके चेलों के जीवनकाल में ही, प्रभु का राज्य सामर्थ सहित आया। यह घटना प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के दस दिन बाद यरूयशलेम नगर में घटी। उस दिन तीन हजार लोग प्रभु की आज्ञा मानकर उसके राज्य अर्थात उसकी कलीसिया में शामिल हुए। प्रभु की कलीसिया ही उसका राज्य है। उसकी कलीसिया में सारे लोग उसकी प्रजा है, और प्रभु उनका राजा है, उसका नया नियम उसके राज्य की व्यवस्था, अर्थात कानून है, जिसके अनुसार उसकी प्रजा चलती है, और उसके राज्य की सीमा सम्पूर्ण संसार है। क्योंकि उसने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा, कि तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। (मरकुस 16:15, 16; मत्ती 28:19)। आज कोई भी मनुष्य, प्रभु यीशु में विश्वास करके और अपने पापों से मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर उसके राज्य में सम्मिलित हो सकता है।

आज हमें परमेश्वर से यह प्रार्थना नहीं करनी है कि उसका राज्य आए, क्योंकि उसका राज्य आ चुका है। परन्तु आज हमें यह प्रार्थना करनी है कि परमेश्वर के राज्य की उन्नति हो, अधिक से अधिक लोग उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके राज्य में शामिल हो और उसे मजबूत बनाएं।

प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है कि परमेश्वर ने "हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।" (कुलुस्सियों 1:13)। परमेश्वर आपको भी अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने पुत्र यीशु मसीह के राज्य में मिला सकता है, "जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" (कुलुस्सियों 1:14)। क्या आप मन फिराकर उसकी आज्ञाओं को मानेंगे? परमेश्वर आपको अपने वचन पर चलने की शक्ति दे।

मसीही जीवन

जे. सी. चोट

मसीही बनने का वास्तविक अर्थ है, मसीही जीवन को जीना और इस पाठ में हम इसी बात को देखेंगे।

किसी ने यह बात सही कही है कि जब आप मसीही बन जाते हैं तब यह

आपके नये जीवन की एक शुरूआत होती है और ये भी कि परमेश्वर आपसे क्या चाहता है। एक बच्चे का जब इस संसार में जन्म होता है तब उसे यह नहीं पता होता कि उसका आगे का जीवन कैसा होगा? आगे बड़े होकर पढ़ाई-लिखाई करनी होती हैं तथा फिर नौकरी के लिये मेहनत करनी पड़ती है। एक छोटे बच्चे को उसके विषय में कुछ नहीं पता होता। इसी प्रकार से जब कोई बपतिस्मा लेकर एक नया इंसान बन जाता है तब उसमें बहुत से बदलाव आते हैं।

मसीही बनने के लिये अपने मन को तैयार करना पड़ता है। यानि मसीही बनने के बाद मसीही जीवन को जीना एक बहुत बड़ी बात है। यदि कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेकर अपने पुराने पाप पूर्ण जीवन, को लेकर चलता है तो उसके लिये, यह एक समय व्यर्थ गंवाने वाली बात है। अब प्रेरित पतरस ने इसके विषय में एक बहुत बड़ी बात कही थी। उसने कहा था, "और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फंसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है कि कुत्ता अपनी छांट (उल्टी) की ओर और धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।" (2 पतरस 2:20-22) यहां प्रेरित पतरस बताता है कि जब कोई मसीही बनकर वापस संसार में चला जाता है तब उसकी क्या दशा होती है।

कभी भी किसी को ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि मैं एक मसीही बन गया हूं और अब मैं हमेशा के लिये बच गया हूं, अब चाहे मैं कैसा भी जीवन व्यतीत करूं। हमें यह समझना चाहिए कि मसीही जीवन जीना इतना सरल नहीं है। मसीही जीवन जीने का अर्थ है परमेश्वर की अराधना करना। कोई भी मसीही सण्डे या रविवार की आराधना मिस नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि प्रभु ने यह दिन कलीसिया की आराधना के लिये बनाया है। (प्रेरितों 20:7)। पिन्तेकुस्त के दिन जब तीन हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया तब वे लगातार प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने (प्रभु भोज) में और प्रार्थना करने में लौलिन रहे। (प्रेरितों 2:42)।

मसीही जीवन जीने का अर्थ है एक पवित्रता का जीवन। मसीही बनने का अर्थ है अपने पापों से मन फिराकर पापों को धो डालना (प्रेरितों 22:16)। पुरानी बातें बीत गई, देखो सब कुछ नया हो गया अर्थात मसीह में नई सृष्टि बनना। (2 कुरि. 5:17)। नये जीवन का अर्थ यही है कि एक नया जीवन आरंभ करना जब कोई व्यक्ति पुराने जीवन को त्याग देता है तब वह एक साफ सुथरा पवित्र जीवन व्यतीत करने लगता है। (कुलु. 3)। 1 थिस्स. 5:22 में प्रेरित कहता है, अपने को पवित्र रख। यीशु ने कहा था, "धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" (मत्ती 5:8)।

मसीही जीवन जीने का अर्थ है यीशु के पीछे चलना या उसका अनुसरण करना। मसीही का अर्थ है मसीह जैसा इंसान। (1 पतरस 4:16)। एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु के पद चिन्हों पर चलता हैं। पतरस ने इसके विषय में कहा था, "और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।" (1 पतरस 2:21)। एक मसीही यीशु की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारता है और इसीलिये उसका जीवन आम लोगों से भिन्न होता हैं ।

मसीही जीवन जीने का अर्थ है अपने जीवन को समर्पित करना यानि यीशु के साथ समान जुए में जुत जाना। (मत्ती 11:28-30) एक मसीही को यीशु के लहु से खरीदा गया है। अर्थात उसके लिये दाम चुकाया गया है। (1 कुरि. 6:20)। यीशु ने अपनी कलीसिया अर्थात मण्डली को अपने खून से खरीदा हैं (प्रेरितों 20:28)। मसीही बनने का अर्थ यह नहीं है कि मुझे क्या मिलेगा? बल्कि इसका अर्थ यह है कि मैं मसीह के लिये क्या दे सकता हूं?

मसीही जीवन जीने का मतलब है मसीह में आगे बढ़ना। अर्थात मसीही बनने के पश्चात आपको विश्वास, प्रेम, नम्रता, सेवा भावना में आगे बढ़ना है। पतरस मसीहीयों को लिखता है, "नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)। फिर वह कहता है, "इसलिये की मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए" (1 पतरस 3:18)। बात तो यह है कि जब कोई व्यक्ति मसीही बनकर बढ़ता है तो उसमें बल आता है और वह प्रभु में बलवान बन जाता है। प्रेरित पौलुस ने इस बात को इस प्रकार से कहा था, "निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो, कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल युद्ध लोहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।" (इफि. 6:10-12)।

मसीही जीवन को जीने का अर्थ यह भी है कि दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखना। एक मसीही को यह याद रखना चाहिए कि लोग आपके जीवन को देख रहे हैं। वे आपके जीवन को बारिकी से देखते है कि आपका चाल-चलन, बोलचाल तथा व्यवहार कैसा है? यदि आपने कोई गलती की तो आप पर एक दम उंगली उठेगी। लोग कहेंगे कि बोलते कुछ और हैं करते कुछ और हैं। इसलिये याद रखिए कि आप कौन है और किसके अनुयायी हैं? यीशु ने कहा था कि तुम जगत की ज्योति हो, इसलिये तुम्हारा उजियाला दूसरों के सामने चमके ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बढ़ाई करे। (मत्ती 5:16)।

मसीही जीवन जीने का अर्थ यह भी है कि अपने जीवन में अच्छा फल लाना। मसीह के सुसमाचार को फैलाना है (मरकुस 16:15)। अपने साथियों की सहायता करना। (याकूब 1:27)। प्रेरित पौलुस कहता है, "सो मेरे प्रिय भाईयों, दृण और अटल रहो और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है" (1 कुरि. 15:58)। यीशु ने कहा था, "सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है उसे वह छांटता है, ताकि और फले। (यूहन्ना 15:1)। फिर यीशु ने कहा था, "मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो, जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" (यूहन्ना 15:5)।

मसीही जीवन जीने का अर्थ है, विश्वास योग्य बनकर रहना। विश्वासयोग्य लोग प्रभु के प्रति ईमानदार बनकर रहते है। यीशु ने कहा था, "मृत्यु तक विश्वास योग्य रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशित 2:10)। जो लोग ईमानदार है प्रभु उनके विषय मैं कहता है, "धन्य है वे जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।"

क्या आप एक मसीही है? यदि नहीं तो इसके विषय में सोचिये। यदि आप मसीही है तो आगे बढ़ते रहिये।

मसीह में माफ़ी

हैन्स जे. डैडर्शेक

क्षमा की परिभाषा "कर्ज माफ करना, छोड़ देना, कम करना" के रूप में की जाती है (भजन 32:1; मत्ती 9:2; लूका 7:48)। पापों की क्षमा की बात करने पर हमें "ये पाप हम पर न लगने दे" की बात भी करनी आवश्यक है (गिनती 12:11)।

इस प्रकार क्षमा को प्रभु के कार्य के रूप में देखा जाता है जो मनुष्य के आज्ञा न मानने से, जिससे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को बहुत चिड़ है और जो मनुष्य के लिए बहुत कष्टदायक है, ये परमेश्वर के नियमों को तोड़ने से उत्पन्न दुखद परिस्थिति में ले जाता है। पाप पवित्र परमेश्वर और मनुष्य के बीच के वास्तविक संबंध को नष्ट कर देता है। मनुष्य अपने आप में पापों की क्षमा को पाने के लिए अधिक कुछ नहीं कर सकता। परमेश्वर ही है जो अपनी पूरी सामर्थ से कार्य करता है। अपनी करूणा और धीरज में वह उस दण्ड को देने से इंकार करता है जिसका मनुष्य हकदार है और वह मनुष्य को दण्ड विराम दे देता है।

नये नियम में जोर दिया गया है कि क्षमा को कमाया नहीं जा सकता। मत्ती

18:23-35 हमें परमेश्वर पापों की क्षमा करने का एक बेहतरीन नमूना देता है। पापी मनुष्य परमेश्वर के सामने अपने आप फिर से रह पाने के अयोग्य हैं। मनुष्य स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकता (मरकुस 10:26, 27)।

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है और यदि वह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पाप की क्षमा प्राप्त करने के लिए उसकी शर्तों को पूरा करे तो वह उसके अपराध क्षमा करना चाहता है। "तेरे पाप क्षमा हुए" (मरकुस 2:5)। मनुष्य के विश्वास, मन फिराव, विश्वास के अंगीकार और पानी में बपतिस्मा लेने की परमेश्वर की शर्तों को मान लेने पर मनुश्यों को परमेश्वर की ओर से मुफ्त वरदान का शुभ समाचार पापों की क्षमा है (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:1-10)। परमेश्वर पिता मनुष्य की घर वापसी की राह देख रहा है (लूका 15:11-29)। मनुष्य के नालायक होने के बावजूद परमेश्वर की करूणा उसे परमेश्वर के पास लौटना संभव बना देती है। पिता के घर और जीवन में उसका लौट आना पाप में गिरे मनुष्य की बहाली को संभव बनाता है।

पापों की क्षमा और जीवन की बहाली परमेश्वर के पुत्र मसीह के बिना असंभव थी। केवल मसीह के पास ही पाप क्षमा करने की सामर्थ है। मसीह की मृत्यु को छुटकारे के कार्य के रूप में दिखाया जाता है जो क्षमा को संभव बना देता है। यीशु ने कहा: "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे" (मरकुस 10:45)। पापों की क्षमा देकर केवल यीशु मसीह की आत्मिक जीवन को बहाल कर सकता है। उसका धन्यवाद हो कि पवित्र आत्मा के विरूद्ध किए जाने वाले पाप को छोड़ हर पाप क्षमा किया जाएगा।

जब हम मसीह की कलीसिया को देखते हैं तो हम पाते हैं कि पापों की क्षमा का संबंध मसीह और मसीही जीवन के साथ है। इस अनुग्रह का महत्व विशेषकर बपतिस्मे में है। "पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:38)। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों का क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा" (लूका 24:47)।

पौलुस ने कहा, "अत: उस (यानी यीशु मसीह) का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए.... हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए और हम आगे को पाप के दास्तव में न रहें" (रोमियों 6:1-10)।

मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि वे अपने साथ बुरा करने वालों को क्षमा करें। मसीही समाज का असली माहौल पापों की पक्की क्षमा वाला माहौल है। दूसरों को उनके अपराध क्षमा किए बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना

है (मत्ती 6:12-14; 18:21-35; मरकुस 11:25)। इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।"

अपने साथियों के पाप क्षमा किए बिना परमेश्वर की क्षमा के साथ रहना नामुमकिन है। इस कारण मसीह की कलीसिया के लिए क्षमा केवल कल की बात नहीं। यह परमेश्वर का सजीव कार्य है, जिसका पता मनुष्य को क्षमा में मिलता है और जो बिना रूके उसके लिए भविष्य का मार्ग खोलता है।

"जिसमें हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है" (कुलुस्सियों 1:14)। "हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा उसके अनुग्रह के धन से मिला है जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया" (इफिसियों 1, 7, 8)। जिस प्रकार से परमेश्वर मसीह में हमारे पापों को क्षमा करता है उसी प्रकार से हमें भी अपने साथियों को क्षमा करना आवश्यक है। सच्चे दिल से पाप क्षमा किए बिना मसीही समाज की कल्पना करना नामुमकिन है।

"तराजू में तौला गया"

(प्रकाशित वाक्य 18:3-17, 22-24)

डेविड रोपर

बाबुल के राजा बेलशस्सर ने अपने हजारों अधिकारियों को एक दावत दी। जब जश्न पूरे चरम पर था तो राजा ने सोने और चांदी के बर्तन मंगवा लिए जो यरूशलेम के मन्दिर से लाए गए थे। पवित्र बर्तनों में शराब पीते और इब्रानियों के परमेश्वर का मजाक उड़ाते हुए दावत में भाग लेने वालों के ठहाकों से महल गूंज रहा था। परन्तु एक हाथ को दीवार पर "मने, मने तकेल और ऊपर्सीन" (दानिय्येल 5:25)लिखते हुए देख उनकी हंसी गुल हो गई।

राजा को बताया गया कि इन शब्दों के तीन अर्थ हैं : (1) परमेश्वर ने उसके राज्य को सीमित कर दिया और उसका अन्त होने वाला था (आयत 26); (2) उसे "तराजू में तौला गया और वो हल्का पाया गया" था (आयत 27) और (3) उसका राज्य बांटकर मादी और फारसी लोगों को दे दिया गया था (आयत 28)। "उसी रात कसदियों का राजा बेलशस्सर मार डाला गया" (आयत 30)। भविष्यवाणी के अनुसार, बाबुल नगर मादा-फारस को सौंप दिया गया (आयत 31)।

प्राचीन बाबुल में नये नियम का समकालीन रोमी नगर था, जिसे प्रकाशितवाक्य में "बड़ा बाबुल" कहा गया हैं रोम का "दीवार पर लिखा" प्रकाशितवाक्य 18 अध्याय में मिलता है। डैनियल रस्सल ने कहा था कि यह "समझ में आने वाला सबसे आसान अध्याय है।" वही संदेश बार-बार दोहराया गया है कि "बाबुल (यानी

रोम) गिर गया।" पूरे अध्याय की समीक्षा हम बाद में विस्तार से करेंगे, परन्तु अभी मैं वचन से यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इसमें रोम के बारे में क्या बताया गया है। वह बड़ा नगर न्याय के परमेश्वर के तराजू पर तौला जाने पर हल्का क्यों पाया गया? अध्याय 18 में नगर और नागरिक के लिए सबक है।

अनोखा परन्तु विनाश हो रहा वचन में, यहां रोम की तुलना "मलमल और बैंजनी और किरमिची कपड़े पहिने... और सोने और रत्नों, और मोतियों से सजी" (आयत 16) "रानी" (आयत 17) से की गई है। आयत 14 उसे "मोहक और भड़कीली" बताती है। अमेरिकी कवि एडबगर एलन पो ने रोम की शान में लिखा है: "रोम कला का केन्द्र था, जिससे संसार भर का साहित्य और कलात्मक गुणों वाले लोग आकर्षित होते थे।"

"वीणा बजाने वाले, और बजनियों और बंसी बजाने वाले, और तुरही फूंकने वालों का शब्द" (आयत 22) पूरे नगर में सुनाई दे सकता था। कुशल कारीगरों की कलाकृतियां (आयत 22) आंशों को चुंधिया देती और सोच में डाल देती थी। रोम रोशनियों वाला चमकदार, काम करते रहने वाला हलचल भरा और समृद्ध नगर था (आयतें 22, 23)। पर्यटकों के लिए इसके हर कोने में एक नया आश्चर्य था।

अफसोस कि रोम सुन्दर होने के साथ-साथ बुरा भी था। आयत 5 कहती है कि "उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुंच गया" था। सदियों पहले लोगों ने आकाश तक जाने के लिए एक बुर्ज बनाने की कोशिश की थी (उत्पत्ति 11)। जो काम ईंटों के साथ बाबुल के लोग नहीं कर पाए थे, वह बड़े नगर बाबुल के लोगों ने पाप के साथ कर दिया था।

रोम में रहने वाले मसीही लोगों के नाम लिखते हुए पौलुस ने अपने समय के समाज के पाप का विवरण परमेश्वर की प्रेरणा से दिया था जो रोम के जैसा ही था;

"इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभव के विरूद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया।

और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म और दुष्टता और लोभ और वैर भाव से भर गए; और डाह और हत्या और झगड़े और छल और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार बुरी-बुरी बातों के बताने वाले, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दयी हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं

कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य है, तौभी न केवल आप ही ऐसे ही काम करते हैं, वरन करने वालों से प्रसन्न भी होते हैं" (रोमियों 1:24-32)।

थॉमस फुलर ने कहा है, "जो पाप में गिर जाता है, वह इनसान है", "जो इस पर पछताता है, वह संत है", परन्तु "जो इस पर इतराता है वो शैतान है।" रोम ने केवल पाप ही नहीं किया था, बल्कि वह अपने पाप पर इतराता था। प्रकाशितवाकय 17 से 19 अध्याय भ्रष्टता और बदचलनी की रोम की तस्वीर को पेश करते हैं, परन्तु विलियम बार्कले ने कहा था कि "यूहन्ना की रोम की तस्वीर वास्तव में उन कुछ तस्वीरों की तुलना नहीं है, जो स्वयं रोमियों ने बताई थी।"

सुलैमान ने कहा था, "जाति की बढ़ती धर्म से ही होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है" (नीतिवचन 14:34)। रोम को पता चल जाना था कि उसकी "आकर्षक सुन्दरता मुरझाने वाला फूल" थी (यशायाह 28:1), और यह कि "जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही काटेगा" (नीतिवचन 22:8)। बुद्धिमान की बातें यहां प्रासंगिक होती है, "शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी" (देखें नीतिवचन 31:30)।

शक्तिशाली परन्तु बिगड़ा हुआ: रोम का दूर तक असर करने वाला प्रभाव प्रकाशितवाक्य के 17, 18 और 19 अध्यायों में स्पष्ट दिखाई देता है, वह पृथ्वी के देशों पर राज करती थी (17:1, 15); वह उन पर भी राज करती थी, जिनके पास अधिकार था और उन पर भी जिनके पास अधिकार नहीं था (17:18)। रोम के फोरम में लिए गए निर्णय साम्राज्य के हर कोने में लोगों को प्रभावित करते थे। नगर में संसार का व्यापार भी होता था (18:11-17)। "रोम की बन्दरगाह आस्ट्रिया में खम्भों की कतार वाला चौक था, जहां कारोबारी कम्पनियों ने... अपने दफ्तर बना रखे थे, और साम्राज्य में यह सत्ता के बड़े केन्द्रों में से एक था।"

भलाई करने के लिए रोम के पास कितनी शक्ति थी। परन्तु जातियों को ऊपर उठाने के बजाय उसने उन्हें नीचा ही किया। स्वर्गदूत ने कहा, "क्योंकि उसके व्यभिचार की भयानक मदिरा के कारण सब जातियां गिर गई हैं, साथ व्यभिचार किया है" (18:3क)। फिर आयत 9 पृथ्वी के राजाओं के द्वारा "उसके साथ व्यभिचार" करने की बात करती है। यूनानी शब्द के अनुवाद "व्यभिचार" का मूल अर्थ "कुमार/कुमारी संभोग" है। इसमें शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार का, विशेषकर सम्राट की पूजा का व्यभिचार आता है। अपने व्यभिचार से उसने पूरे संसार को भ्रष्ट कर दिया था (देखें 19:2)।

आयत 23 कहती है कि रोम ने जातियों को "टोने" से भरमाया। "टोने" झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले झूठे चमत्कारों की तरह हो सकते हैं। फिर भी शायद यह पृथ्वी के लोगों पर "जादू करने" की बात थी यानी उसने "सुरक्षा का झूठा दिलासा देकर सब जातियों पर टोना किया।" उसने "जातियों को यह विश्वास दिलाया कि वे परमेश्वर का साथ छोड़ (सकती हैं), ...कि अंतिम सुरक्षा धन और विलासिता में मिल सकती हैं।" उसने जातियों को "अपने झूठे मापदण्डों और सामग्री

की पूजा करना" स्वीकार करा के जादू में डाला।

अच्छाई या बुराई के लिए प्रभावित करने वाला रोम पहला और अंतिम नहीं था। हर नगर और हर नागरिक का इतना प्रभाव होता है कि जिससे सहायता या हानि हो सकती है। यीशु ने सकारात्मक प्रभाव की शक्ति पर बल देने के उदाहरणों के रूप में नमक और ज्योति का इस्तेमाल किया (मत्ती 5:13-16)। पौलुस ने नकारात्मक प्रभाव के असर पर बल देने के लिए खमीर का इस्तेमाल किया (1 कुरिन्थियों 5:6; गलातियों 5:9)। एलीहू बुरिट ने कहा है, "बिना मानवीय प्रसन्नता के घटने या बढ़ने से कोई मानवीय जीवन संसार में नहीं हो सकता।"

हो सकता है कि आपको यह ध्यान न हो कि आपका अपना प्रभाव हो सकता है परन्तु आपका प्रभाव है। "बारीक से बारीक बाल की भी परछाई होती है।" समझदार लोग अपने प्रभाव का इस्तेमाल दूसरों को ऊंचा उठाने के लिए करते हैं, न कि उन्हें गिराने के लिए।

प्रसिद्ध, परन्तु घमण्डी (प्रकाशितवाक्य 18:7): पुरानी कहावत है, "हर रास्ता रोम को जाता है।" मैंने प्राचीन रोम फोरम के बीच में "सुनहरी मील स्तम्भ" के खण्डहरों पर खड़े होकर देखा है। इस मील स्तम्भ पर साम्राज्य के दूरवर्ती मुख्य नगर से जुड़ी बड़ी चौकियों की दूरी लिखी गई थी। रोम लाखों लोगों का पसंदीदा स्थान था।

अफसोस है कि रोम की प्रसिद्धि ने उसको घमण्डी बना दिया था। आयत 7 कहती है कि "उसने अपनी बड़ाई की.... क्योंकि वह अपने मन में कहती है, 'मैं रानी हो बैठी, विधवा नहीं, और मैं शोक में कभी न पड़ूंगी।" उसका व्यवहार ऐसा था जैसे "मैं राज करती रहूंगी। मैं कभी नहीं मरूंगी और मेरे बच्चे कभी न मरेंगे।" "कभी न मरेंगे" का वाक्यांश फ्लेवियन राजवंश के आदर्श वाक्य के रूप में स्वीकारा गया था यानी ये शब्द सिक्कों के ऊपर उकेरे जाते थे और शिलालेखों में भी होते थे।

रोम वाली बात की कई लोगों के लिए भी लागू होती है। आस्ट्रेलिया में रहते हुए मैं ऐसे कई लोगों से मिला, जिन्हें लगता था कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। कइयों का व्यवहार तो ऐसा था जैसे "हमारे पास सन (अर्थात सूर्य) सर्फ (मनोरंजन) और सोशल सिक्योरिटी (अर्थात सामाजिक सुरक्षा) हैं; हमें परमेश्वर की आवश्यकता क्यों होगी?" यह सोच आस्ट्रेलिया में ही नहीं, संसार के अधिकतर भागों में पाई जाती है। समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो हर बुरी बात के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं, परन्तु अच्छा होने पर श्रेय खुद को देते हैं।

बुद्धिमान ने कहा है, "विनाश से पहिले गर्व होता है, और गिरने से पहले घमण्डी मन" (नीतिवचन 16:18)। यह सच्चाई रोम के नगर में मूर्ख रूप में दिखाई देती थी। अध्याय 18 की 1 से 8 आयतों के अनुसार रोम के विनाश का सबसे बड़ा कारण उसका घमण्ड था। उसके अक्खड़पन से सैकड़ों अन्य पाप उत्पन्न हो गए जो "आकाश तक ऊंचे ढेर" बन गए थे और जो परमेश्वर द्वारा शीघ्र ही "स्मरण किए" जाने थे। रोम को लगा था कि वह "अनन्त" है अर्थात वह अलग रास्ता निकाल लेगी।

कवि पर्सी बी शैली ने धूप में पड़ी मूर्ति के बारे में अर्थात "जंगल में" खड़ी

"पत्थर की दो बड़ी और धड़ रहित टांगों" पर लिखा है। टांगों के निकट "रेत पर, धड़ धंसा हुआ" "भौहों के ऊपर त्यौरियां चढ़ा और मजाक उड़ाता" बिखरता हुआ पत्थर का सिर पड़ा था। और नीचे के शब्द लिख हैं, "मेरा नाम राजाओं का राजा ओजीमेंडियास है; हे शक्तिमान और निराश, मेरे कामों को देख।"

शैली ने अंत में लिखा, इसके अलावा कुछ नहीं बचा है। उस विशाल खण्डहार के आस-पास जहां तक नजर जाती है, वीरान और समतल भूमि दूर-दूर फैली हुई है।

कवि द्वारा वर्णित वीरान विशाल मूर्ति पर विचार करें, फिर प्रकाशितवाक्य 18:2, 22, 23 वाले उजाड़े गए नगर को देखें। घमण्ड के परिणामों को समझें। पुराना नियम सिखाता है, "मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है, परन्तु नम्र आत्मा वाला महिमा का अधिकारी होता है" (नीतिवचन 29:23)। नया नियम कहता है, "क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा और जो छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा। (लूका 14:11)। आइए, हम अपने परमेश्वर के साथ दीनता में चलना सीखें (मीका 6:8)।

हमारे साथ परमेश्वर का सम्बन्ध

जेम्स ई. प्रीस्ट

परमेश्वर के तीन निवास स्थल है: स्वर्ग में, अपने संसार में ओर अपने लोगों में पहले खण्ड "परमेश्वर की असीमितता" में परमेश्वर की व्यापकता पर जोर दिया गया था। हमने उसके सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, और सर्वशक्मिान होने पर विचार किया था। यदि हम केवल परमेश्वर को सांसारिक दृष्टिकोण से ही देखें, तो हमारे लिए यह समझना कठिन हो जाएगा कि वह संसार में हमारे जैसे छोटे से कणों के साथ संबंध क्यों बनाना चाहता है।

दूसरे खण्ड "हमारे लिए परमेश्वर का संदर्भ" में हमने उसे सृष्टिकर्त्ता के रूप में और अपने आपको उसके सृजे हुए गए संसार में जीवों के रूप में देखा था। हमें यह अहसास होता है कि परमेश्वर इतिहास में एक नाटकीय भूमिका निभाता है और हम उस ऐतिहासिक नाटक के भाग अर्थात पात्र है। फिर हमने ध्यान दिया कि परमेश्वर का सर्वोच्च गुण उसकी पवित्रता है। इसलिए उसकी सृष्टि में एक नैतिक गुण है। उसका इतिहास जो उसके पूर्व प्रबंध की योजना से संसार में कार्य कर रहा है, एक निश्चित या अंतिम लक्ष्य के साथ नैतिक दबाव रखता है। वह हमसे उस की ओर बढ़ने के लिए नैतिक मार्च में भाग लेने की उम्मीद करता है। हमें इस दौड़ को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए उसकी सहायता, उत्साह तथा प्रेम की आवश्यकता है। इसलिए आइए परमेश्वर के साथ अपने संबंध और उस ईश्वरीय सहायता की जो वह हमें देता है, समीक्षा करें।

हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और

समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हरएक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी भी अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20, 21)।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हो, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं (यूहन्ना 3:16-21)।

संसार की घृणा

ऍंडी क्लोर

"यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उसने तुम से पहिले मुझसे भी बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं वरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसलिए संसार तुम से बैर रखता है। ...जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। यदि मैं उनमें वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है, कि उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर किया" (यूहन्ना 15:18-25)।

यीशु के जीवन के चकरा देने वाले रहस्यों में से इन प्रश्नों में पाया जाता है, "संसार ने उसे क्रूस पर क्यों चढ़ाया?" संसार ने उस उद्धार को जिसे वह लेकर आया था खुली बाहों से, आत्मिक आनन्द और सनातन आभार के साथ ग्रहण क्यों नहीं

किया? चाहे उसमें सच है जो मनुष्य को होना चाहिए उसके चरम के रूप में जीवन व्यतीत करके उस सम्पूर्ण भलाई को दिखाया पर संसार उसे सह न सका, अर्थात जब उसने देखा कि वह कौन है और संसार में क्या लेकर आया है, तो इसने तुरन्त उसे नष्ट करने की ठान ली। संसार के अंधकार ने उस सच्ची ज्योति को जिसे वह लेकर आया था, बुझाना चाहा। यह कैसे हो सकता है? कोई प्रेम के सच्चे और सिद्ध उद्धारकर्त्ता को कैसे ठुकरा सकता है? संसार ने सच्चाई के प्रति घृणा के कारण उसे ठुकरा दिया।

यीशु के लिए इस घृणा की वास्तविकता और कठोरता यीशु की मृत्यु से पूर्व अटारी वाले कमरे में चर्चा का मुख्य विषय था। प्रभु अपने प्रेरितों को भविष्य के लिए अर्थात उन्हें शैतान के कब्जे वाले संसार का सामना करने में सहायता के लिए जो उसका विरोध कर रहा था और उसे शीघ्र क्रूस पर चढ़ाने वाला था, तैयार करना था। प्रेरितों को उसकी तरह संसार में जीवित रहकर यीशु के काम को जारी रखना और उसके मिशन को पूरा करना था। संसार ने भयंकर तरीके से उनका विरोध करना था, जैसे इसने उसका विरोध किया था, इसलिए उन्हें तैयार होना आवश्यक था। यूहन्ना 15:18-25 में हमारे प्रभु ने उन्हें उसके लिए जो आने वाला था तैयार किया।

यीशु दो अन्य चर्चाओं के साथ जो यूहन्ना 15 में मिलती हैं इस विषय पर आया। उसने उसमें जीवन जो मिलने वाला था दिखाने के लिए दाखलता और टहनियों के रूपक का इस्तेमाल किया। उन्हें उसमें वैसे ही जीवन मिलना था जैसे डाली को दाखलता में से मिलता है (आयतें 1-8)। इस रूपक से वह उसमें प्रेम पर आया जो उन्हें एक-दूसरे के प्रति दिखाना था, यानी वह प्रेम जो उनके शिष्य होने का प्रतीक होना था (आयतें 9-17)। वह जीवन और प्रेम का उनका स्रोत था। उन्हें एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम रखना था जैसे पिता ने उसके साथ रखा था और उसने उनके साथ रखा था। फिर इस कारण से वह उस सताव और घृणा से उन्हें परिचित कराने लगा जो संसार ने उनके साथ करनी थी (आयतें 18-25)। उन्हें उसके कारण घृणा किए जाने के भविष्य का सामना करना था।

अटारी वाले कमरे में उसके द्वारा की गई हर चर्चा का विषय उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण था। कोमलता, और उनके सामने आने वाली कठिनाइयों से पूरी तरह परिचित, उसने उन्हें जीवन के उन अंधकारमय गलियारों के लिए तैयार किया जिनमें से उन्हें राज्य के आरंभ का भाग बनकर गुजरना था।

हम यह मान सकते हैं कि यीशु का चेला बनने का निश्चय करने वाले हर व्यक्ति को अपने नये, अद्भुत कार्य में प्रवेश करते हुए अपने आस-पास के हर व्यक्ति से पूरा प्रोत्साहन मिला होगा। चेले का जीवन सबसे अच्छा और सबसे अधिक प्रतिफल देने वाला है। इसलिए क्या वह व्यक्ति जो इस जीवन को ग्रहण करना चाहता है अपने आस-पास के संसार से उद्धारतापूर्ण सहायता नहीं पाएगा? एक अर्थ में यीशु ने अपने प्रेरितों की चेतावनी दी, "नहीं, यह इसके विपरीत होगा। संसार आपका विरोध करेगा। आपके साथ वैसे ही घृणा की जाएगी जैसे मेरे साथ की गई थी।" मसीह के विश्वासी चेले को वैसा ही विरोध करना पड़ेगा जो यीशु ने सहा और उसे

इसके लिए तैयार रहना आवश्यक है। उसे शैतान संसार, और शरीर से घृणा झेलनी पड़ेगी।

पुरानी घृणा

मसीह के चेलों के विरूद्ध यह घृणा बहुत पहले परमेश्वर के विरूद्ध घृणा उठी थी। इस घृणा की सनातन पृष्ठभूमि में शैतान द्वारा परमेश्वर का विरोध छिपा है। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा इसके लिए निराधार बन गई। उसने उसे तुच्छ माना और अपने साथ कई स्वर्गदूतों को लेकर जो अब अनन्त न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसके विरूद्ध विद्रोह कर दिया (2 पतरस 2:4)। सच्चाई और धार्मिकता के जनक परमेश्वर ने पाप को संसार में आने दिया ताकि स्वर्गदूत और मनुष्य जो सही है उसकी नैतिक पहचान में बढ़ सकें और अपने विकास में वे सही को चुनकर अपने नैतिक विवेक को इस्तेमाल कर सकें।

परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करके शैतान पाप को अस्तित्व में लाया। पाप शैतान से भी बुरा है क्योंकि इसी ने उसे शैतान बनाया है। अदन में पाप के प्रवेश के साथ "आकाश के अधिकार के हाकिम" (इफिसियों 2:2) ने इस संसार में धार्मिकता के विरूद्ध अपना युद्ध छेड़ दिया। कुछ हद तक उसने अपने प्रभाव के साथ इस संसार के भण्डारों, इसके आनन्दों, इसके लोगों और इसकी शक्तियों पर कब्जा करते हुए संसार पर अपने प्रभाव से कर लिया है।

इसका अर्थ यह है कि यीशु के विरूद्ध घृणा के पीछे परमेश्वर के प्रति घृणा है। दुष्ट की शक्तियों द्वारा धार्मिकता, सच्चाई और भलाई के लिए उसके प्रेम को कभी सराहा या स्वीकारा नहीं जाएगा। पाप किसी मन को पूरी तरह से तोड़ नहीं सकता कि यह भले जीवन की इच्छा ही न करें, बल्कि इसके विपरीत अपनी बुरी अभिलाषाओं के कारण वास्तव में इससे घृणा करता है।

यीशु के प्रति घृणा

यीशु की सेवकाई के दौरान ईश्वरीय भलाई के प्रति यह घृणा झगड़े के अपने चरम पर पहुंच गई। पिता के लिए घृणा पूरी सामर्थ के साथ यीशु पर आ पड़ी, क्योंकि वह पिता के साथ एक है। उसे पिता द्वारा संसार में सच्ची रौशनी लाने के लिए भेजा गया था। पृथ्वी पर अपने जीवन में उसमें संसार पर जय पाने की पिता की इच्छा समाई हुई थी। उसके धर्मी जीवन ने संसार की दुष्टता का न्याय किया। परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाते हुए और परमेश्वर का जीवन बिताते हुए और परमेश्वर की सनातन योजना को प्रगट करते हुए उसने संसार की बुरी शक्तियों को इतना भड़का दिया, जितनी वह पहले कभी नहीं भड़की थी।

अटारी वाले कमरे में यीशु ने अपने प्रेरितों पर यह प्रगट किया कि बुराई के साथ विजय पाने वाले मनों के लिए उसकी सेवकाई का क्या अर्थ है। उसने कहा: "यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है कि

उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर किया" (यूहन्ना 15:24,25)।

संसार ने जब मसीह की धार्मिकता को देखा तो यह उसका विरोध करने को तैयार हो गया।

यीशु के कामों से बना किसी संदेह के यह साबित हो गया कि वह परमेश्वर की सच्चाई था और परमेश्वर की इस सच्चाई ने बिना किसी संदेह के यह साबित कर दिया कि बुराई का नाश होना आवश्यक है। संसार में यीशु के प्रवेश के कारण, सबसे बड़ा झगड़ा हुआ जो अच्छाई और बुराई, सच्च और झूठ प्रेम और घृणा के बीच है। सबसे बड़ा पाप उस स्पष्ट सच्चाई को नकारना है जो यीशु ने दी है। संसार बुराई की अंधेरी शक्तियों में और उन्हीं के लिए रहता था, जबकि यीशु आशा, भलाई और प्रेम की तेज सामर्थ में और उसके लिए रहा। जब यीशु की रोशनी संसार के ऊपर चमकी तो बुराई की शक्तियों ने पूरी सामर्थ के साथ उसका विरोध किया। रोशनी की मांग थी कि पाप की मृत्यु हो इस कारण पापपूर्ण संसार ने ज्योति से घृणा की, ज्योति को नकार दिया और इसे नष्ट करने के लिए अपना हाथ उठाया। इस प्रबल घृणा ने यीशु के विरूद्ध "मृत्यु तक लड़ाई" को उकसाया। उसके सिद्ध जीवन ने एक निर्णय के लिए विवश किया। इस युद्ध भूमि में कोई तटस्थ नहीं रह सकता था। हर व्यक्ति को उसके प्रेम या उससे घृणा या उसकी सेवा या उसे क्रूस पर चढ़ाना, अर्थात या उसकी आराधना या उसकी सामर्थ को शैतान के हवाले कर देना था।

संसार द्वारा उसके कामों को देख लेने के बाद लड़ाई वास्तव में आरंभ हो गई। या तो उसके कामों को स्वीकारा या फिर उनका विरोध किया जाना आवश्यक था। बुराई की पसंद विरोध ही था। अंधकार भरे संसार ने देखा कि यीशु कौन है और उसने क्या किया है और इसने उसे नष्ट करने का ठान लिया। यीशु ने कहा, "उन्होंने बिन कारण मुझ से बैर किया।" वह सच्चाई जीवन और प्रेम को छोड़ और कुछ नहीं था और उसमें कोई पाप नहीं था। यीशु का विरोध करने वालों के पास ऐसा करने का कोई जायज कारण नहीं था। यीशु का पूरा विरोध ज्योति से बढ़कर बुराई को चुनने की इच्छा के कारण हुआ। यीशु के साथ ऐसा हुआ और उस दुष्ट द्वारा चलाए जाते इस संसार में ऐसा ही होता रहेगा।

यीशु के अनुयायियों के प्रति घृणा

मसीह का अनुयायी होने के कारण चेले को भी वही घृणा सहनी पड़ती है जो मसीह को सहनी पड़ी। जो बात पिता के लिए सत्य थी वही यीशु के लिए भी थी; और जो यीशु अर्थात स्वामी के लिए है वही उसके पीछे चलने वाले किसी भी चेले के लिए है। जिस घृणा के कारण यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, वही घृणा अलग-अलग समयों में अलग-अलग रूपों में उस चेले पर पड़ती है जो यीशु की तरह रहता और सेवा करता है। जिस प्रकार से वह संसार में था, वैसे ही चेला भी संसार में होगा। यीशु ने कहा:

यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसीलिए

संसार तुम से बैर रखता है। जो बात मैंने तुम से कही थी कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो, यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे, यदि उन्होंने मेरी बात मानी तो तुम्हारी भी मानेंगे। परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजने वाले को नहीं जानते (यूहन्ना 15:18-21)।

यीशु ने अपने प्रेरितों को संसार द्वारा उनसे घृणा किए जाने पर चकित न होने को कहा, बल्कि इस घृणा का कारण समझने को कहा। जब हमारा ऐसा विरोध होता है तो हमें यह समझना आवश्यक है कि हमारे साथ घृणा मसीह के लोग होने के कारण हो रही हैं और हमें यह याद रखना आवश्यक है कि हम से घृणा करने वाले लोग नहीं जानते कि पिता कौन है या पिता वास्तव में संसार में क्या कर रहा है। यदि यीशु के प्रेरित संसार के होते तो संसार उनसे घृणा न करता। संसार अपनों से घृणा नहीं करता। करे भी क्यों? (यूहन्ना 15:19), परन्तु जब प्रभु ने प्रेरितों को संसार में से बुलाया और फिर पापियों को सच्चाई और जीवन देने की पेशकश करके इसे दोषी ठहराने के लिए उन्हें वापस भेजा तो संसार में प्रेरितों के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया। मसीह के सेवक को अपने प्रभु की तरह कुछ न कुछ सहना पड़ेगा। यीशु ने कहा "यदि उन्होंने मुझे सताया तो वे तुम्हें भी सताएंगे" (यूहन्ना 15:20)।

क्या संसार का कोई व्यक्ति इस संदेश को सुनेगा जो यीशु के चेले उसके पास ला रहे हैं? हां, कुछ सुनेंगे। प्रभु ने कहा, "यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।" जिस प्रकार कुछ लोगों ने यीशु को स्वीकार किया, वैसे ही कुछ लोग प्रेरितों की शिक्षाओं को मानेंगे। कुछ लोग आज वचन सुने जाने पर इसे ग्रहण करेंगे। तौभी संसार अपने आप में अपनी सारी बुराई के साथ अर्थात अपने बुरे मार्गों और अभिलाषाओं के साथ परिवर्तित नहीं होगा। यह आक्रमण की मुद्रा में जो इसे सुधारे और उसे प्रकाश में लाए, अपने बचाव में ही रहेगा।

दस कुंवारियों का दृष्टांत

(मत्ती 25:1-13)

यीशु सर्वश्रेष्ठ गुरू था। यीशु के सब दृष्टांतों की तरह समझदार और मूर्ख कुवारियों की कहानी में, एक संदेश था, जो जीवन पर लागू होता है और इसका एक सार्थक उद्देश्य है।

पहला, दृष्टांत हमें समझाता है कि हमें तैयार रहना चाहिए (मत्ती 25:8)। दृष्टांत में एक और विचार है कि जीवन में कुछ चीजें होती हैं, जिन्हें उधार नहीं दिया जा सकता (मत्ती 25:9)। परमेश्वर के साथ सही संबंध को विरासत में या उधार नहीं लिया जा सकता, हमें अपने आप ही उस संबंध को बढ़ाना आवश्यक है। समझदार कुंवारियों पर मूर्खों के साथ अपना तेल साझा करने से इनकार करने के लिए दोष नहीं लगाया जाना चाहिए। इस मामले में उनका तर्क बिल्कुल सही था।

इस वचन में एक अंतिम विचार मिलता है कि खो जाने पर कुछ चीजें दोबारा

नहीं मिल सकती (मत्ती 25:10-13)। अवसर एक से अधिक बार दस्तक दे सकते हैं पर कई बार यह दस्तक केवल अंतिम बार होती है। इसलिये हमें अवसर गंवाने नहीं चाहिए।

मसीही व्यक्ति को मिली कमीशन (मत्ती 25:1-13)

एक अवसर पर यीशु ने स्वयं को एक दूल्हे के साथ मिलाया (मत्ती 9:15; 25:1; यूहन्ना 3:29)। यदि हम स्वयं को उसके बरातियों के रूप में देखते हैं तो हमें उसके आने की राह देखते हुए क्या काम करने को दिया गया है? अपने काम को समझें और इसे प्रेम, आज्ञापालन और वफादारी से पूरा करें।

मसीही लोगों को दिया गया यीशु का कमीशन प्राथमिकता देने वाला है। किसी भी काम को इसके बराबर या इससे नहीं मिलाया जा सकता। सुसमाचार के सृजन में अपना प्राण और लहू डालते हुए हमें इसे फैलाने के लिए खुद देना आवश्यक है। यीशु परोपकार के काम करता था, पर उसके मिशन का मुख्य उद्देश्य यह नहीं था। वह "खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया" था (लूका 19:10)।

मसीही लोगों को यीशु की कमीशन व्यावहारिक बनाना आवश्यक है। उसका वचन मोटे तौर पर बता देता है कि वह हम से ग्रेट कमीशन को कैसे पूरा करवाना चाहता है। हमें (1) "सब जातियों में" सुसमाचार बताना (मत्ती 28:19), (2) नये मसीही लोगों को "सब बातें (जिनकी यीशु ने आज्ञा दी है) मानना "सिखाना (मत्ती 28:20), और (3) प्रभु के लोगों की हर मण्डली के लिए अगुवे तैयार करना है। प्रेरितों के काम में चर्च बिल्डिंग अर्थात चर्चभवन या वेतनभोगी स्थानीय प्रचारकों के बारे में कुछ नहीं कहा गया जिन्हें आज पास्टर या पादरी कहा जाता है, पर यह हर कलीसिया में ऐल्डरों की नियुक्ति करने (प्रेरितों 14:23), "तीमुथियुस जैसे" लोग तैयार करने (देखें प्रेरितों 16:1-3) और प्रचारकों को भेजने (प्रेरितों 13:1-3) के बारे में अवश्य कहता है।

यीशु का कमीशन (यानी आदेश) मसीही लोगों को सिद्ध बनाने का है। इसमें सुधार की गुंजाइश नहीं हो सकती। अपनी कलीसिया के लिए दिए जाने के समय यीशु की यह योजना सम्पूर्ण थी, और पूरे मसीही युग के दौरान उसके चेलों के लिए यह सम्पूर्ण रहेगी। यीशु के ग्रेट कमीशन में किसी भी मिशनरी या प्रचारक के लिए आवश्यक हर बात है, कम से कम इसके बीज के रूप में तो है। हम उस मिशन को जिसका आरंभ यीशु ने किया था लें, जिसे उसने हमें दिया है। यदि हम उसकी योजना को लागू करते हैं तो वह हमारी बातों और हमारे कामों को बढ़ावा देगा।

मसीही लोगों के लिए यीशु का कमीशन आगे बढ़ते रहना है। उसकी योजना पृथ्वी पर के शेष समय के लिए है। यीशु ने कहा था, "मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:20)। उसके वापस आने तक हम सुसमाचार के

उसके काम को बढ़ाने, नये मसीहियों को वचन सुनाने और विश्वासयोग्य चेलों को संसार के सबसे बड़े काम में लगने के लिए तैयार करने के उसके काम को करते रहें।

"जागते रहो" (मत्ती 25:13)

यदि यीशु हमें बता देता कि वह ठीक किस समय आने वाला है, तो कौन तैयार न होता? कितने लोग उसके आने से थोड़ा पहले पापपूर्ण जीवन बिताने की कोशिश कर रहे होते और फिर उसके लौटने से थोड़ा पहले अपनी जीवन शैलियों को बदल देते? क्योंकि हम नहीं जानते कि यीशु कब आ रहा है इसलिए हमें हर समय तैयार रहना आवश्यक है। यीशु के शब्दों में, हमें "प्रार्थना करते" रहना आवश्यक है कि हम "परीक्षा में न" पड़ें (मत्ती 26:41)। क्या इसका अर्थ यह है कि हम प्रभु की वापसी के लिए आराम से बैठकर स्वर्ग की राह देखते रहें और चौकस रहें? यीशु को मालूम था कि कुछ लोग ऐसा कर सकते हैं। ऐसा होने से बचाने के लिए ही उसने तोड़ों का दृष्टांत दिया था।

गंदी ज़बान

लुइस रशमोर

जाहिर है कि हर जबान में गंदे शब्द होते हैं। प्रेरित पौलुस के द्वारा कुलुस्सियों 3. 8 में परमेश्वर की संतान को अपनी बातचीत में ऐसी जबान का उपयोग न करने के लिए लिखा गया है: "पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, बैरभाव और मुंह से गालियां बकना,ये सब बातें छोड़ दो।"

इफिसियों 4:29 ऐसा ही संदेश देता है, "कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो।"

इफिसियों 5:4 गंदे शब्दों के संबंध में ऐसी ताड़ना के लिए ध्यान दिलाता है, "और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की, क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, वरन धन्यवाद ही सुना जाए।"

ऊपर बताई गई आयतों में से ध्यान दें कि गंदी जबान पापपूर्ण शब्दों की केवल एक किस्म है जो व्यक्ति के मुंह से निकल सकती है। क्रोध, निंदा दोनों "मूढ़ता की बातचीत" और "ठट्ठे" (इफिसियों 5:4) के साथ-साथ लोभ या जबान को दोषपूर्ण या पापूर्ण बताता है। इसके अलावा परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेने को भयंकर पाप कहा गया है (निर्गमन 20:7)।

हम इस जानकारी को क्या नाम दें? कुल मिलाकर मसीही व्यक्ति की जबान विशेष रूप से ऐसी बातों से मुक्त होनी चाहिए।

बुरे शब्दों की एक और श्रेणी मीठी छुरी वाली जबान है। यह तब होता है जब

भाषा के स्थान पर अधिक उपयुक्त शब्दों को लगाया जाता है परन्तु उनका इरादा उसी घिनौने संदेश को देना होता है।

कई बार ऐसी परिस्थिति होती है जिसमें व्यक्ति को लगता है कि वह गंदी जबान के इस्तेमाल को बढ़ावा दे रहा है। यह परिस्थिति वह है जिसमें परमेश्वर की संतान को चाहिए कि वह अपने आपको स्वेच्छा से पड़ने दे (हम यहां नर नारी दोनों की बात कर रहे हैं क्योंकि गंदी भाषा केवल पुरुषों केलिए ही पाप नहीं है)। किसी की जबान या भाषा को बिगाड़ने के सबसे बड़े प्रलोभनों में से दो (1) बुरी संगति हमारे बोलचाल के ढंग को बिगाड़ सकती है। (1 कुरिन्थियों 15:33), (2) नशे या शराब का उपयोग आमतौर पर गंदी-भाषा के साथ-साथ और कई प्रकार के पाप करने के कारण बनता है।

जो व्यक्ति अपने मुंह पर ताला नहीं लगाता उसे बड़े न्याय के समय यीशु ही दोषी ठहराएगा। "और मैं तुम से कहता हूं कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:36, 37)। इसका अर्थ यह है कि किसी की जबान सचमुच में एक गंभीर मामला है क्योंकि इससे उसका अनन्तकाल प्रभावित होगा कि वह वहां रहेगा या रहेगी।

याद रखें, "...क्रोध, रोष, बैरभाव, निंदा, और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो" (कुलुस्सियों 3:8)।

"कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले..." (कुलुस्सियों 4:29)।

"न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की क्योंकि ये बातें सोहती नहीं..." (इफिसियों 5:4)।

"जीभ भी एक आग है, जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहतीहै। क्योंकि हर प्रकार के वन पशु, पक्षी, और रेंगने वाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं। पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता, वह एक ऐसी बला है जो कभी रूकती ही नहीं, वह प्राण-नाशक विष से भरी हुई है। इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं श्राप देते हैं। एक ही मुंह से धन्यवाद और श्राप दोनों निकलते हैं" (याकूब 3:6-10)।

"तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा" (निर्गमन 20:7)।

"और मैं तुम से कहता हूं कि जो-जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:36-37)।